भगवान् श्रीकृष्ण इन 'सुरभि' नामक गायों को प्रचुर संख्या में पालते हैं। वे नित्य गोचारण निरत हैं। सदाचारी-सन्तान की उत्पत्ति के लिये लक्षित काम 'कन्दर्प' कहलाता है, जो श्रीकृष्ण का एक रूप है। केवल इन्द्रियतृप्ति के लिए किया गया मैथुन श्रीकृष्ण का रूप नहीं है। सदाचारी सन्तान की उत्पत्ति में प्रयुक्त मैथुन ही कन्दर्प कहलाता हैं। यह भी श्रीकृष्ण की एक विभूति है।

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।
पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्।।२९।।

अनन्तः=अनन्त (शेषनाग); **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **नागानाम्**=सब नागों में; **वरुणः**=जल का अधिपति देवता; **यादसाम्**=जलचरों में; **अहम्**=मैं (हूँ); **पितृणाम्**=पितरों में; **अर्यमा**=अर्यमा नामक पितरेश्वर; **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **यमः**=मृत्यु का नियन्ता यमराज; **संयमताम्**=शासन करने वालों में; **अहम्**=मैं (हूँ)।

अनुवाद

दिव्य नागों में मैं शेषनाग (अनन्त) हूँ और जलचरों में उनका अधिपति वरुण देवता हूँ; पितरों में अर्यमा नामक पितरेश्वर तथा शासन करने वालों में मृत्यु का नियन्ता यमराज मैं हूँ।।२९।।

तात्पर्य

नाना प्रकार दिव्य नागों में अनन्त (शेषनाग) सबसे महान् हैं और जलचरों में वरुण सर्वश्रेष्ठ हैं। ये दोनों ही श्रीकृष्ण के रूप हैं। अर्यमा नामक पितरेश्वर एक वृक्षमय लोक के अधीश्वर हैं। ये भी श्रीकृष्ण की विभूति हैं। बहुत से शक्तिशाली दुष्टों के लिए दण्ड का विधान करते हैं; इन सब में यमराज प्रधान हैं। ये यमराज पृथ्वी के एक निकट के लोक में स्थित हैं। मृत्यु के बाद पापात्मा प्राणियों को वहाँ ले जाया जाता है और यम उनके लिये यथोचित्त दण्ड का विधान करते हैं।

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्।।३०।।

प्रह्लादः=प्रह्लाद; **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **दैत्यानाम्**=दैत्यों में; **कालः**=महाकाल; **कलयताम्**=दमन करने वालों में; **अहम्**=मैं (हूँ); **मृगाणाम्**=पशुओं में; **च**=तथा; **मृगेन्द्रः**=सिंह; **अहम्**=मैं (हूँ); **वैनतेयः**=गरुड़; **च**=भी; **पक्षिणाम्**=पक्षियों में।

अनुवाद

दैत्यों में मैं प्रह्लाद हूँ और दमन करने वालों में काल हूँ तथा पशुओं में सिंह और पक्षियों में मैं विष्णुवाहन गरुड़ हूँ।।३०।।

तात्पर्य

दिति और अदिति सगी बहनें हैं। इनमें से अदिति के पुत्र 'आदित्य' कहलाते